



THE
MENTORING
PROJECT

अनन्तकाल की भलाई के लिए
धन का उपयोग करना:
धन के बारे में बाइबल क्या कहती है?



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

अनन्तकाल की भलाई के लिए धन का
उपयोग करना: धन के बारे में बाइबल
क्या कहती है?



लेखक: डॉ. रिचर्ड परहार्ड

सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स

विषय-वस्तु

परिचय: बन्द मुट्टी की कैद.....	4
भाग एक: मालिक और प्रबन्धक.....	7
भाग दो: बटुए में रखी मूर्तियाँ.....	11
भाग तीन: उदारता की शब्दावली.....	14
भाग चार: प्रेम के प्रबन्धकीय काम.....	17
भाग पाँच: वह सम्पत्ति जो संसार के समाप्त होने के बाद भी बनी रहती है.....	20
निष्कर्ष: अन्तिम लेन-देन.....	22



परिचय: बन्द मुट्ठी की कैद

पढ़ने वाले से वादा: स्वामित्व की जंजीरें तोड़ना

यदि आप अपने विश्वास और अपने बैंक खाते के बीच लगातार होने वाले टकराव से थक गए हैं, तो पुराने मार्गों पर वापस जाने के लिए यह मार्गदर्शिका आपके लिए एक नक्शा है। अधिकांश वित्तीय सलाह इस बात पर ध्यान देती हैं कि और अधिक कैसे मिले; और हम इस बात पर ध्यान देंगे कि आपके पास पहले से जो है, उसका असली मालिक कौन है। इस परिचय के अन्त तक, आप बेहतर ढंग से समझ जाएँगे कि अपने जीवन का “मालिक” होने का बोझ ही आपकी चिन्ता का असली कारण क्यों है, और आप बाइबल-आधारित भण्डारीपन की स्वतंत्रता की ओर एक साफ मार्ग देख पाएँगे। हम बन्द मुट्ठी की कैद से निकलकर खुले हाथ वाली शान्ति की ओर बढ़ रहे हैं।

ध्यान दें: यह सामग्री बाइबल-आधारित भण्डारीपन के बारे में आत्मिक और व्यावहारिक जानकारी देती है। यह व्यक्तिगत रूप से वित्तीय सलाह या निवेश की सलाह नहीं है। विशेष वित्तीय योजना बनाने के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर व्यक्ति से सलाह लें।

आर्थर बक्सों से भरे एक घर में रहते थे। वह 84 वर्ष की आयु के थे, और वह ढेर इतने ऊँचे थे कि खिड़कियाँ दिखाई नहीं देती थीं। जब उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई, तो वह एक छोटी जगह पर रहने चले गए, परन्तु वह सब कुछ अपने साथ ले गए। जब भी मैं चाय पीने के लिए उनसे मिलने जाता, वह थके हुए दिखाई देते थे। उन्होंने कहा, “पास्टर जी, मैं इन्हें छोड़ नहीं सकता।” वह अपने ही सामान के कैदी थे, उनके पास एक भण्डारण कक्ष की चाबी थी, जहाँ वह वर्षों से नहीं गए थे, और वह उन वस्तुओं को सम्भालने में ही थक जाते थे, जिनका वह उपयोग भी नहीं करते थे। हममें से अधिकांश लोग ऐसे ही जीवन बिताते हैं। हम अपने धन और सम्पत्ति के साथ एकतरफा रास्ते की तरह बर्ताव करते हैं। हम इकट्ठा करते चले जाते हैं। हम ढेर लगाए चले जाते हैं। हम कसकर पकड़े रखते हैं। परन्तु अन्त में उस बन्द मुट्ठी में पीड़ा होने लगती है।

कलीसिया में, हम भण्डारीपन शब्द का उपयोग करते हैं। पास्टरिय सभा की बैठक के लिए यह अक्सर एक सूखा-सा शब्द लगता है, जो धार्मिक शब्दजाल का एक हिस्सा है जिसमें असल जीवन की सच्चाई की कमी है। परन्तु असल में, यह स्वतंत्रता की शब्दावली है। एक भण्डारी बस एक प्रबन्धक होता है। यदि आप किसी और के लिए खेत जोतते हैं, तो आप सम्पत्ति कर या मौसम के उतार-चढ़ाव की चिन्ता में रात भर जागते नहीं रहते। वह आपका काम नहीं है। आप बस अपना

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

काम करते हैं और मालिक पर भरोसा करते हैं। हमारी समस्या यह है कि हम सच में मानते हैं कि हम ही मालिक हैं। हम वेतन की पर्ची पर अपना नाम देखकर सोचते हैं कि हमने इसे कमाया है। हम अपनी बचत को देखकर शान्ति का झूठा एहसास करते हैं। परन्तु बाइबल इस बारे में साफ-साफ कहती है। भजन संहिता 24:1 कहता है, “पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है।” धूल, हवा और आपकी जेब में मौजूद हर पैसा परमेश्वर का है। हम तो बस कुछ समय के लिए इसे सम्भाल रहे हैं।

यह कहना यहाँ तो आसान है, परन्तु मंगलवार को जब हीटर खराब हो जाए या कार का बीमा करवाना हो, तो यह बहुत मुश्किल हो जाता है। यहीं से परेशानी आरम्भ होती है। उत्पत्ति 3 अध्याय में पतन के बाद से ही, हमें यह भरोसा हो गया है कि यदि हम अपना ध्यान नहीं रखेंगे, तो कोई और भी हमारी देखभाल नहीं करेगा। हम डर के कारण वस्तुएँ जमा करते हैं। मैं अपने कार्यालय में हर सप्ताह ऐसा होते हुए देखता हूँ। मैं ऐसे युवा जोड़ों को देखता हूँ, जो इसलिए सो नहीं पाते, क्योंकि उन्होंने बहुत महंगा घर खरीदा लिया है। मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ, जिनके पास लाखों रुपया है और जिन्हें अभी भी डर लगता है कि मरने से पहले उनके रुपये समाप्त हो जाएँगे। दोनों ही समूह मालिक बनने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु मालिक बनना एक ऐसा भारी बोझ है, जिसे उठाने के लिए मानवीय आत्मा का निर्माण कभी नहीं किया गया था।

धर्म-सुधार आंदोलन के दौरान, लोगों को बाइबल का यह सच याद आने लगा कि उनके प्रतिदिन के काम भी महत्व रखते हैं। जूते बनाने वाला व्यक्ति भी परमेश्वर की सेवा कर रहा था। परन्तु जब वे लोग धनी होने लगे, तो उन्हें एक नये प्रश्न का सामना करना पड़ा। क्या यह पैसा केवल मेरे लिए है, या किसी बड़ी बात के लिए है?

मुझे आपका बैंक खाता सम्भालने के “तरीके” आपको बताने में कोई रुचि नहीं है। मैं विश्वास की मजबूती के बारे में बात करना चाहता हूँ। हमें इस बारे में बात करनी चाहिए कि दान देना मुश्किल क्यों होता है और जब पड़ोसी को सामान ढोने वाला एक नया चमकदार ट्रक मिलता है, तो हम डाह क्यों रखते हैं। यह फिर से साँस लेना सीखने के बारे में है। यह अपने हाथ खोलने के बारे में है। जब आपके हाथ खुले होते हैं, तो परमेश्वर बातों को बाहर निकाल सकता है, और इसी के साथ वह बातों को भीतर भी डाल सकता है। यह गणित के बारे में नहीं, परन्तु भरोसे के बारे में है। हम उन अस्त-व्यस्त पहलुओं पर बात करेंगे, जिनमें ईमानदारी से यह मानना शामिल है कि हम अपने बैंक में पड़े रुपयों की पूजा करते हैं। परमेश्वर कोई सही कागज नहीं खोज रहा है। उसे ऐसा हृदय चाहिए, जो भीड़-भाड़ वाले कमरे में बिना खुले बक्सों के ढेर से अधिक उस पर भरोसा करे। सबसे पहले हमें यह तय करना होगा कि असल में प्रभारी कौन है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

भण्डारीपन की बाइबल-आधारित परिभाषा क्या है? बाइबल-आधारित भण्डारीपन का अर्थ यह पहचानना है कि परमेश्वर ही हर बात का मालिक है और हम प्रबन्धक हैं, जिन्हें उसके संसाधन सौंपे गए हैं कि उसकी महिमा के लिए उनका उपयोग करें। जैसा कि 1 इतिहास 29:14 में बताया गया है कि सब कुछ परमेश्वर की ओर से मिलता है, और हम वही वापस देते हैं, जो पहले से ही उसका है।

“स्वामित्व” की सोच से आर्थिक चिन्ता क्यों उत्पन्न होती है? जब हम यह विश्वास करते हैं कि हम मालिक हैं, तो हम अपने जीवन को चलाने की जिम्मेदारी स्वयं उठा लेते हैं। और चूँकि हम सीमित हैं और यह संसार अनिश्चितताओं से भरा

अनन्तकाल की भलाई के लिए धन का उपयोग करना

पड़ा है, तो इससे डर उत्पन्न होता है। भण्डारीपन “प्रबन्ध करने” का बोझ वापस परमेश्वर पर डाल देता है, जो कि असली मालिक है।

क्या “प्रबन्धक” होने का अर्थ यह है कि मैं अपने धन का आनन्द नहीं ले सकता? ऐसा नहीं है। एक अच्छा प्रबन्धक मालिक के संसाधनों का उपयोग मालिक के उद्देश्यों के लिए करता है, जिसमें प्रबन्धक की देखभाल और आनन्द भी शामिल है। 1 तीमु. 6:17 हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे आनन्द लेने के लिए हमें भरपूर वस्तुएँ बाँटें देता है, कि हमारी आशा धन-सम्पत्ति पर नहीं, परन्तु उस पर हो।

मुझे कैसे पता चलेगा कि मैंने धन को ही देवता मान लिया है? इसके कुछ आम संकेत होते हैं, जिनमें भविष्य को लेकर लगातार चिन्ता करना, उदारता के साथ दान न देना और दूसरों की सम्पत्ति से अपनी सम्पत्ति की तुलना करना शामिल है। यदि आपकी शान्ति आपके बैंक खाते में पड़े रुपयों की संख्या पर निर्भर करती है, तो वह संख्या ही आपका देवता बन गई है।

जब तक हम काल्पनिक स्वामित्व का बोझ नहीं छोड़ते, तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकते। आर्थर के बक्से केवल फालतू सामान वाले नहीं थे; वे एक ऐसी मूर्ति की तरह थे, जो प्रकाश को रोक रही थी। स्वतंत्रता पाने के लिए, हमें अपने बनाए उस घुटन भरे कमरे से बाहर निकलकर परमेश्वर के अधिकार वाली खुली हवा में कदम रखना होगा।

हमारे सामने असल जीवन की मुश्किलों और परेशानियों के बारे में बातचीत रखी हुई है। यह मार्ग टूटे हुए घमण्ड की पीड़ा से गुजरते हुए उस शान्ति की ओर ले जाता है जो बाजार पर निर्भर नहीं करती। हम बुनियाद रखने से आरम्भ करते हैं। हमें एक बार और हमेशा के लिए यह तय करना होगा कि असल में इस घर का मालिक कौन है।

1

मालिक और प्रबन्धक

मालिक की धन-सम्पत्ति: भजन संहिता 24 अध्याय और अधिकार का मिथक

क्या कोई मनुष्य सच में उस भूमि का मालिक होता है, जिस पर वह खड़ा है? हम इस पृथ्वी पर चलते-फिरते हैं, उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं के पत्थरों से सजाते हैं और कानूनी कागजों से उसकी घेराबंदी करते हैं, फिर भी वह भूमि हमारे अधिकार के दावों की परवाह नहीं करती। वह प्रभु की है। भजन संहिता 24:1 के अनुसार, “पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है, जगत और उस में निवास करनेवाले भी।” हमारे नाखूनों के नीचे जमी धूल का हर कण और बैंक खाते के बहीखाते का हर एक अंक, सृष्टि के अधिकार से उसी का है। यह सच एक ऐसी घोषणा के रूप में वचन में गूँजता है, जो स्वयं को सब कुछ समझने वाले मनुष्य के घमण्ड को चकनाचूर कर देती है। हम मालिक नहीं हैं; हम तो बस सहायता करने वाले, सहारा देने वाले या भण्डारी हैं। जब तक सूरज चमक रहा है, तब तक हमें मालिक की धन-सम्पत्ति की देखभाल के लिए काम पर रखा गया है; हमें एक ऐसे खेत की देखरेख का काम सौंपा गया है, जो आरम्भ से ही न तो कभी हमारा था और न ही कभी हमारा होगा।

इसके अलावा कुछ और सोचना बहुत बड़ी गलतफहमी है: यह उस किराएदार का घमण्ड है, जो कुछ समय तक एक घर में रहने के बाद, यह विश्वास करने लगता है कि उसने ही उस घर की नींव रखी थी। यह उस मूर्ख किसान जैसा है, जो सोचता है कि मालिक के बेटे से अधिक खेत पर उसका अधिकार है। पैसों का मालिक होने और उसका प्रबन्धन करने के बीच का अन्तर समझना सच्ची स्वतंत्रता की ओर पहला कदम है। परन्तु हम सभी, चाहे आत्मिक सम्पत्ति का प्रबन्धन कर रहे हों या भौतिक सम्पत्ति का, मालिक को लेखा देने के लिए जिम्मेदार हैं। बाइबल-आधारित भण्डारीपन के सिद्धान्तों को लागू करने का अर्थ यह समझना है कि परमेश्वर फल की आशा करता है—अर्थात् वह अपने निवेश पर व्याज चाहता है—और इसका अर्थ यह सीखना है कि परमेश्वर के संसाधनों का अच्छा भण्डारी कैसे बनें।

क्या आज सच में परमेश्वर ही मेरे बैंक खाते का मालिक है? हाँ। पवित्रशास्त्र स्पष्ट कहता है: “चाँदी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है” (हाम्गै 2:8)। आपका बैंक खाता उसकी धन-सम्पत्ति का बस एक हिस्सा मात्र है, जिसका प्रबन्धन करने के लिए कुछ समय तक उसे आपको सौंपा गया है। हम उसकी हवा में साँस लेते हैं। हम उसका सोना खर्च करते हैं। हम उसकी जगह पर रहते हैं। यहाँ तक कि भूमि, जो उत्पादन का सबसे बुनियादी साधन

अनन्तकाल की भलाई के लिए धन का उपयोग करना

है, वह भी प्रभु की है। परमेश्वर हमें ऐसे परदेशियों के रूप में देखता है, जिनका भूमि पर कोई स्थायी अधिकार नहीं है (लैव्य. 25:23)। जबकि इससे हमें शान्ति मिलनी चाहिए, परन्तु अक्सर ऐसा नहीं होता।

मानवीय आत्मा का यही बुनियादी टकराव है: हम जागीर के मालिक बनना चाहते हैं, परन्तु हम तो बस धूल के भण्डारी हैं। क्या कोई मनुष्य सच में उस वस्तु पर अपना दावा कर सकता है, जिसे वह बनाए नहीं रख सकता? हम परमेश्वर के द्वारा दिए गए जीवन के बिना कुछ मिनटों से अधिक बिना हाँफि अपनी साँस नहीं रोक सकते। फिर भी हम “मेरा” पेशा, “मेरी” सम्पत्ति और “मेरी” विरासत की बात ऐसे करते हैं कि मानो हम ही भाग्य-निर्माता हो। यह कठोर सांसारिक सच्चाई है। हम तो परोक्षी हैं, नियुक्त किए गए जन हैं, और सृष्टिकर्ता के प्रतिनिधि हैं। हम ऐसी सम्पत्ति का प्रबन्धन करते हैं, जो उधार में मिली है और अस्थायी है।

इस पूरी निर्भरता को फिर से नये किए गए हृदय के द्वारा स्वीकार करना होगा। हजारों पहाड़ियों पर मौजूद मवेशी परमेश्वर के हैं, साथ ही वे पहाड़ भी उसी के हैं (भज. 50:10)। वह उन फेफड़ों का भी मालिक है, जिनसे हम श्वाँस लेते हैं और उस मस्तिष्क का भी, जिससे हम योजनाएँ बनाते हैं। राजा के संसाधनों का गलत तरीके से प्रबन्धन करना कोई मामूली बात नहीं है। यह केवल आर्थिक गलती नहीं है; यह ईश-वैज्ञानिक बलवा है। हम ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो मालिक कभी वापस नहीं आएगा। हम ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो हमारे काम के बजाय खेत ही हमारी विरासत हो। परन्तु मुट्ठी कसने की आवश्यकता नहीं है। पिता हमें अपना राज्य देने में प्रसन्न होता है।

पाप की भारी कीमत: उत्पत्ति 3 अध्याय और पतन की कमी

स्वामित्व का यह बुखार कहाँ से आरम्भ हुआ? अदन की वाटिका में, एक टूटी हुई वाचा के मलबे के बीच इसका आरम्भ हुआ था। उत्पत्ति 3 अध्याय में, मनुष्य के हृदय में एक बहुत बड़ा बदलाव आया। हमें पिता की उपस्थिति में सुरक्षा पाने के लिए बनाया गया था, परन्तु पाप ने हमें स्वयं के बनाए अनाथों जैसा बना दिया। हम डरने लगे। और पतन केवल अपराधबोध ही नहीं लाया; यह एक गहरी, बैचैन करने वाली कमी का एहसास भी लाया। हमने इस संसार को देखा और फिर हमने पिता के प्रबन्ध को नहीं देखा। हमें इस बात पर विश्वास करने के लिए बहकाया गया कि वह अपनी वस्तुएँ हमें नहीं दे रहा है। हमने एक ऐसा जंगल देखा, जिसे या तो हमें जीतना था या उसमें समाप्त हो जाना था। और इसलिए, हम वस्तुएँ जमा करने लगे। इसी कारण से हाथ सिक्रे को कसकर पकड़ लेता है। हमें काफी वस्तुएँ न होने का डर इसलिए लगता है, क्योंकि अब हमें उस पर भरोसा नहीं रहा, जिसके पास सब कुछ है। पाप हमें छोटा बना देता है। यह हमारे क्षितिज को तब तक इतना छोटा कर देता है, जब तक कि हम बस अपनी आवश्यकता, अपना पेट और अपना बचा-खुचा अस्तित्व ही देख पाते हैं। हम व्यर्थ का सामान इसलिए जमा करते हैं, क्योंकि हम उसके अनुग्रह के सोने को नहीं देख पाते। इकट्ठा करने की चाहत पतन की एक निशानी है। यह एक पतित प्राणी का परछाईयों से गढ़ बनाने का बैचैन प्रयास है।

मुझे और अधिक बचाने और जमा करने का इतना दबाव क्यों महसूस होता है? यह दबाव अक्सर सीधे पतन से आता है। अपनी पतित दशा में, हम देने वाले व्यक्तियों के बजाय “वस्तुओं” में सुरक्षा ढूँढ़ते हैं।

इस दबाव को बढ़ाने के लिए कम से कम तीन शक्तियाँ एक साथ काम करती हैं। सबसे पहले, सांस्कृतिक और बाजार के प्रभाव हमें हर दिन उपभोक्तावाद से घेरे रहते हैं। लगातार आने वाले विज्ञापन यह दिखाते हैं कि वस्तुएँ खरीदने और उन्हें

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

अपना बनाने से ही हमें सारी प्रसन्नता, आनन्द और संतुष्टि मिल सकती है। और बैंक भी इसमें शामिल हो जाते हैं और ऐसी आसान उधारी वाली योजनाएँ बताते हैं, जो लोगों को कर्ज के जाल में फँसाती हैं। यह तुरन्त संतुष्टि पाने का संस्कृति है। दूसरी बात, अलग-अलग तरह की चिन्ताएँ इस दबाव को और बढ़ाती हैं। इसमें अचानक आने वाली मुसीबतें, कॉलेज की पढ़ाई या सेवानिवृत्ति हेतु भविष्य के लिए बचत करने और योजना बनाने के सही कारण भी होते हैं। हालाँकि, हमारी सोच ऐसी बन गई है कि हमें कभी लगता ही नहीं कि हमारे पास पर्याप्त है। हमारे पास चाहे कितना भी हो, हम गलत तरीके से सोचते हैं कि हमें उससे दोगुना चाहिए! तीसरी बात, भीतरी आत्मिक समस्या भी दबाव को बढ़ाती है। वस्तुएँ जमा करने से सुरक्षा और सफलता का एहसास होता है। परन्तु यह सब परमेश्वर के प्रति हमारी भक्ति के लिए खतरा बन सकता है, क्योंकि हम एक ही समय में समृद्धि और परमेश्वर दोनों के प्रति वफादार नहीं रह सकते। हमें जो दबाव महसूस होता है, वह हमारे सबसे बड़े भरोसे और निष्ठा के लिए एक बुनियादी मुकाबले को दिखाता है।

वस्तुएँ जमा करने से सुरक्षा का एहसास तो होता है, परन्तु परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसे के बिना, यह चिन्ता का पिजरा बन जाता है। परछाइयों से बना गढ़ प्रावधान की लहर को नहीं रोक सकता। हम यह सोचकर कड़ी मेहनत करते हैं और पसीना बहाते हैं कि हमारा परिश्रम ही इस संसार को चला रहा है। परन्तु यह सब बेकार है। यह हवा के पीछे भागने जैसा है, जिसके बारे में उपदेशक ने चेतावनी दी है (सभो. 1:14)। हृदय और वचन के बीच का यह टकराव हमारी स्वायत्तता की अभिलाषा में सबसे साफ दिखता है। हम स्वयं ही स्रोत बनना चाहते हैं। हम स्वयं ही फव्वारा बनना चाहते हैं। परन्तु हम तो बस नलियाँ हैं। जब कोई नली यह सोचने लगती है कि वही पानी है, तो वह अपने ही महत्व के बोझ से जाम हो जाती है। जमा करना हमारी गहरी आत्मिक कमी का लक्षण है। हम परमेश्वर के अधिकार रखने के आनन्द से स्वयं को इसलिए वंचित रखते हैं क्योंकि हम स्वयं अधिकार रखने वाले की भूमिका निभाने के प्रयास में बहुत व्यस्त रहते हैं। हमें डर लगता है कि यदि हमने सब छोड़ दिया, तो कुछ नहीं बचेगा। हम भूल जाते हैं कि प्रभु कोई ऐसा निरंकुश शासक नहीं है, जो हमें हमारी रोटी न दे, बल्कि वह तो पिता है, जो हवा के पक्षियों के लिए भी प्रावधान करता है। फिर भी, अपनी श्रृष्टा के कारण, हम राजा के महल में पेट भरकर खाने वाले दास बनने के बजाय, बंजर भूमि के भूखे राजा बनना पसन्द करते हैं।

प्रतिनिधि का आनन्द: परमेश्वर के सामान पहुँचाने वाले चालक के रूप में जीवन बिताना

क्या हमारे बनाए इस पिजरे से निकलने का कोई रास्ता है? एक ऐसा आनन्द है, जिसे यह संसार समझ नहीं सकता, और वह एक ऐसा आनन्द है, जो प्रतिनिधि बनने में मिलता है। हमें स्वयं को परमेश्वर के सामान पहुँचाने वाले चालकों के रूप में देखना चाहिए। जो सम्पत्ति हमारे हाथों से गुजरती है—चाहे वह सिक्के वाली सम्पत्ति हो, या समय हो, या कोई प्रतिभा हो—वह हमारे पास ही समाप्त होने के लिए नहीं है। उसे आगे बढ़ना चाहिए। यह एक नदी है, कोई जलाशय नहीं (2 कुरि. 9:10)। जब हम यह समझ जाते हैं कि हम बस एक साधन हैं, जिसके द्वारा मालिक की भलाई इस संसार तक पहुँचती है, तो मालिक होने का बोझ हट जाता है। यह एहसास होने में एक गहरी स्वतंत्रता है कि असल में हमारे पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है। “जलाशय” और “नदी” वाली सोच में क्या अन्तर है? जलाशय वाली सोच निजी सुरक्षा के लिए सम्पत्ति जमा करने का प्रयास इस डर से करती है कि वह समाप्त हो जाएगी। नदी वाली सोच यह समझती है कि परमेश्वर सम्पत्ति इसलिए देता है, ताकि वह विश्वास करने वाले के द्वारा दूसरों की और राज्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आगे बढ़ सके। यदि मालिक हमारे द्वारा कोई सामान भेजता है, तो हम उसे हर्ष के साथ पहुँचाते हैं। यदि सामान छोटा हो, तो हम उसके प्रति विश्वासयोग्य होते हैं। यदि सामान बड़ा हो, तो हम घमण्ड इसलिए नहीं करते, क्योंकि हम जानते हैं कि इन

अनन्तकाल की भलाई के लिए धन का उपयोग करना

वस्तुओं को हमने नहीं बनाया है। हम तो बस पहिए के पीछे काम करने वाले हैं। जब हमें यह एहसास होता है कि सामान की जिम्मेदारी मालिक की है, तो अपनी मेहनत से गुजारा करने का दबाव समाप्त हो जाता है।

परन्तु आत्मा इसका विरोध करती है। आत्मा श्रेय चाहती है। आत्मा उस दस्तावेज पर अपना नाम देखना चाहती है। हमें पुराने रास्तों पर लौटना होगा और याद रखना होगा कि पुराने पवित्र लोगों ने अपने जीवन को भाप के समान समझा था। वे जानते थे कि वे परदेशी हैं। वे जानते थे कि इस जीवन की “वस्तुएँ” तो केवल बेकार की बातें हैं जो जलकर समाप्त हो जाएँगी, और केवल वही बचेगा जो राजा की महिमा के लिए किया गया था। एक भण्डारी होने का अर्थ मालिक की वापसी पर लगातार दृष्टि लगाए रखना है। इसका अर्थ खेत को इतनी लगन से सम्भालना है कि जब वह आए, तो उसे अपनी धन-सम्पत्ति फलती-फूलती मिले। हम यहाँ अपने राज्य बनाने के लिए नहीं हैं। हम यहाँ उसके आगमन तक काम करने के लिए हैं (लूका 19:13)। हम उसके पाल और उसके प्रतिनिधि हैं। यह एक उधार में मिले जीवन की बड़ी बुलाहट है। हाँ, यह जीवन परेशानी से भरा है, परन्तु यह बड़ी शान्ति वाला जीवन भी है। क्योंकि जब आपके पास कुछ भी अपना नहीं होता, तो आपको कुछ खोने का डर भी नहीं होता। आप बस एक प्रबन्धक, एक दास, और जीवित परमेश्वर के एक प्रतिनिधि होते हैं।

मैं कैसे बता सकता हूँ कि मैं मालिक की तरह काम कर रहा हूँ या मैं प्रबन्धक की तरह काम कर रहा हूँ? इसकी पहचान आसान है: मालिक धन पर अपना अधिकार समझता है और नुकसान होने पर टूट जाता है, जबकि प्रबन्धक सौपी गई बातों के लिए आभारी महसूस करता है और नुकसान के समय भी स्थिर रहता है, क्योंकि नियंत्रण मालिक के हाथ में होता है। तो फिर हम अभी भी बलिदान के विचार से क्यों काँपते हैं? क्योंकि हम अभी भी उस झूठ पर विश्वास करते हैं कि हमारा जीवन हमारी सम्पत्ति की बहुतायत से बना हुआ है। दो दमड़ियों वाली विधवा, अनाज से भरी बखारियों वाले धनी मनुष्य से बेहतर प्रबन्धक थी, क्योंकि वह उधार में मिले जीवन के ईश-विज्ञान को समझती थी (मर. 12:41-44)। वह जानती थी कि वे दो दमड़ियाँ भी उसी की हैं। वह एक सामान पहुँचाने वाली चालक थी, जिसने अपना अन्तिम सामान वापस भण्डारगृह में पहुँचा दिया। यही विश्वास की मजबूती है। हर दिन स्वामित्व के आवेग में मर जाना, यही मसीही जीवन का सार है। भण्डारीपन कठिन तो है, परन्तु स्वामित्व का भ्रम पालने जितना कठिन नहीं है। भण्डारीपन का अर्थ ऐसे निर्णय लेना है, जो परमेश्वर का सम्मान करें, जबकि यह संसार हमसे स्वयं का सम्मान करने की माँग करता है। हम बस वे लोग हैं, जिन पर उसने कुछ समय के लिए उसकी पृथ्वी पर चलने-फिरने का भरोसा किया है।

2

बटुए में रखी मूर्तियाँ

सुरक्षा की मृगतृष्णा: सम्पत्ति कभी “पर्याप्त” क्यों नहीं लगती

हम ऐसे लोग हैं, जो “पर्याप्त” के प्रेत से भयभीत रहते हैं। यह एक ऐसी संख्या है, जो हमेशा क्षितिज पर बनी रहती है, और जैसे-जैसे हम उसकी ओर बढ़ते हैं, वह हर कदम पर दूर होती जाती है। हम स्वयं से कहते हैं कि दस लाख रुपये से हमें सुकून की नींद मिल जाएगी, और हम उस तक पहुँच भी जाते हैं, परन्तु वह डर बना रहता है। फिर हम एक करोड़ या दस करोड़ रुपये पर अपनी आँखें लगाते हैं। हमें विश्वास होता है कि सोने की एक विशेष माला मिलने पर हृदय की घबराहट हमेशा के लिए शान्त हो जाएगी। परन्तु यह एक झूठ है। आर्थिक चिन्ता को दूर करने के लिए कितना पैसा पर्याप्त है? कड़वा सच तो यह है कि आत्मा को कभी भी बैंक में पड़े रुपये में विश्राम नहीं मिल सकता, और जब हम उसे ऐसा करने के लिए विवश करते हैं, तो हम धूल से देवता के जैसे काम करने की विनती कर रहे होते हैं। जैसे कि यीशु ने लूका 12:15 में चेतावनी दी थी, “किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।” डर कोई आर्थिक समस्या नहीं है। यह एक ईश-वैज्ञानिक समस्या है। यह उस हृदय की गहरी पुकार है, जिसने अपना धन कहीं खो दिया है।

हम तिजोरी में सुरक्षा इसलिए ढूँढ़ते हैं, क्योंकि हम पिता परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार को भूल गए हैं। यदि हमारा कल परमेश्वर के हाथों में नहीं है, तो इस टूटे हुए संसार के आतंक से हमें बचाने के लिए कितनी भी मुद्रा काफी नहीं हो सकती। हम जमा इसलिए करते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के प्रावधान के विरोध में एक दीवार खड़ी करने का प्रयास कर रहे होते हैं। परन्तु वह दीवार रेत की बनी होती है। हम जितना अधिक जमा करते हैं, हमें उतना ही एहसास होता है कि किसी बीमारी का एक दौर, बाजार की कोई गिरावट, या परमेश्वर का कोई कार्य कितनी आसानी से सब कुछ बहाकर ले जा सकता है।

यह सांसारिक घमण्ड है। हम उन संख्याओं के लिए पसीना बहाते हैं, जो हमसे प्रेम नहीं कर सकती और मुश्किल समय में हमें बचा नहीं सकती। लोग अक्सर पूछते हैं, “क्या भविष्य के लिए पैसा जमा करना पाप है?” परन्तु असल मुद्दा अक्सर आर्थिक चिन्ता से जूझ रहा हृदय होता है। सम्पत्ति पर भरोसा करना किसी ऐसे सरकण्डे पर अपना सारा बोझ डाल देने के जैसा है, जो पहले से ही टूट रहा हो। मानवीय दशा की परेशानी यही है कि वह उन बातों में शान्ति ढूँढ़ता है, जो हमेशा रहने वाली नहीं हैं, और जब कई लोगों को अपने आर्थिक मामलों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, तब वे हैरान होकर कहते हैं, “मैं हमेशा पैसों को लेकर क्यों परेशान रहता हूँ?”

तुलना और डाह की खाई: आभारीपन की मृत्यु

और फिर सड़क की बात आती है। हम बाड़ के उस पार देखते हैं, और हमारे घर का आनन्द गायब हो जाता है। यह डाह की खाई है, यह एक गहरी और ऊबड़-खाबड़ दरार है, जो हमारे आभारीपन की भावना को निगल जाती है। हम पड़ोसी की नयी कार देखते हैं, उनकी सफलता की चमक देखते हैं, और अचानक से जो प्रावधान परमेश्वर ने हमें कम दिया था, वह आज बेकार लगने लगता है। यह तुलना का जहर है। यह चोरी करना है, जो विश्वासी से उस प्रतिदिन की रोटी के लिए “धन्यवाद” कहने की क्षमता छीन लेती है, जो पहले से ही मेज पर रखी है। हम अपनी सम्पत्ति की तुलना दूसरों से क्यों करते रहते हैं? हम ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि हमने अपनी पहचान को धूल-मिट्टी में अपनी तुलनात्मक स्थिति से जोड़ रखा है। हम ऊपर क्रूस की ओर नहीं देखते; हम बगल वाले बगीचे की ओर देखते हैं। डाह घमण्ड की बेटी है। यह मालिक के बँटवारे से संतुष्ट होने से इन्कार करने की बात है। जब हम लालच करते हैं, तो हम प्रभावी रूप से परमेश्वर से कह रहे होते हैं कि उसने हिसाब-किताब में गलती की है। हम कह रहे होते हैं कि वह दूसरों के साथ बहुत उदार रहा है और हमारे साथ बहुत कंजूस रहा है। यह उस हृदय की बेचनी है, जो विश्वास करता है कि वह अनुग्रह से कहीं अधिक का हकदार है। हम नीति, 14:30 की बुद्धिमानी को भूल जाते हैं कि “मन के जलने से हठियाँ भी जल जाती हैं।” हमारे पास जो कुछ भी है, वह हमारी धार्मिकता के लिए मिली मजदूरी नहीं, बल्कि बिना किसी योग्यता के मिला उपहार है। जिस पल हम अपने भण्डारीपन की तुलना किसी दूसरे के भण्डारीपन से करने लगते हैं, तो हम भण्डारी नहीं रह जाते और प्रतिस्पर्धी की तरह व्यवहार करने लगते हैं। परन्तु उसके राज्य में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। वहाँ केवल विश्वासयोग्यता है। पड़ोसी की सड़क को देखना प्रभु से मुँह मोड़ना है। यह ऐसी मेहनत है, जिससे कड़वाहट और खालीपन के अलावा कुछ नहीं मिलता।

ऐसी “आवश्यकताएँ” जो आवश्यकताएँ हैं ही नहीं: भौतिकतावाद को जड़ से समाप्त करना

तो फिर हम जीवन की रोटी और अहंकार के दिखावे के बीच अन्तर कैसे करें? हम अपनी इच्छाओं को सही ठहराने और उन्हें “आवश्यकताएँ” कहने में माहिर हो गए हैं। हम स्वयं को भरोसा दिलाते हैं कि बड़ा घर परिवार के लिए है, या महंगा कोट-पेंट सेवा के काम के लिए है, जबकि असल में, वे अक्सर हमारे अपने घमण्ड के लिए बनाई गई वेदियाँ होती हैं। अहंकार एक भूखा जन्तु है। इसे प्रासंगिक महसूस करने के लिए, सम्मानित महसूस करने के लिए नयी-नयी बातें चाहिए होती हैं। एक मसीही सचमुच भौतिकतावाद से कैसे बच सकता है? इसका उत्तर निर्धनता की शपथ खाने में नहीं, बल्कि वचन के सामने पूरी तरह से ईमानदार होने में मिलता है। हमें अपनी आत्मा से पूछना चाहिए: “क्या यह खरीदारी मालिक की धन-सम्पत्ति के काम की है, या यह केवल मेरे अपने घमण्ड को संतुष्ट करती है?” जैसा कि प्रेरित पौलुस ने 1 तीमु, 6:6-7 में लिखा है कि, “सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं।”

जिसे हम “आवश्यकता” कहते हैं, उसमें से अधिकांश असल में आराम या हैसियत की माँग होती है। हम चाहते हैं कि लोग हमें देखें। हम सुरक्षित रहना चाहते हैं। हम यह महसूस करना चाहते हैं कि सब कुछ हमारे नियंत्रण में है। परन्तु एक मसीही व्यक्ति संसार के लिए मर चुका होता है। मरे हुए मनुष्य के पास संतुष्ट करने के लिए कोई अहंकार नहीं होता। यदि हमें भौतिकतावाद के जाल से बचना है, तो हमें बेकार की बातों के प्रति पवित्र उदासीनता अपनानी होगी। हमें कम में जीवनयापन करने के लिए तैयार रहना चाहिए और भरोसा रखना चाहिए कि राजा और भी बहुत कुछ कर सकता है। यह

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

नियमों के बारे में नहीं है। यह हृदय के तालमेल के बारे में है। आर्थिक संकट के समय मैं पैसों की चिन्ता को कैसे रोक्ऊँ? यह समझने पर आपको शान्ति मिलती है कि आपका बटुआ आपका उद्धारकर्ता नहीं है। यदि बटुआ मूर्तियों से भरा पड़ा है, तो वहाँ आत्मा के लिए कोई जगह नहीं है। हमें स्वयं को सही ठहराने की परतों को हटाना होगा और उस सच्चाई के सामने नंगे खड़े होना होगा कि हम इस संसार में कुछ भी नहीं लाए थे, और निश्चित रूप से कुछ भी ले नहीं जाएँगे। अन्त में वही बचता है, जो उसके नाम पर दिया गया हो। और वही ऐसी असली सम्पत्ति है, जिसे चुराया या नष्ट नहीं जा सकता।

3

उदारता की शब्दावली

पहली उपज: फसल में से देना, बचे हुए में से नहीं

हम ऐसे लोग हैं, जो परमेश्वर को बख्शीश देना पसन्द करते हैं। हम सितारों को बनाने वाले के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं, जैसे कि वह कोई परोसने वाला बैरा हो, जिसने ठीक-ठाक काम किया हो, और अपनी योजनाओं के अनुसार पेट भरने के बाद हम उस पर अपनी दावत के बचे-खुचे सिक्के फेंक देते हैं। यह उस सर्वशक्तिमान की नाक में एक दुर्गंध के समान है। क्या मसीहियों को दशमांश देना चाहिए, या यह हृदय के किसी अलग भाव के बारे में है? जबकि दशमांश का नियम एक आवश्यकता की ओर संकेत करता था, परन्तु हम जानते हैं कि बाइबल का गहरा तरीका “पहली उपज” में मिलता है। यह पुराने मार्ग से आता है। पुराने नियम में, किसान फसल का पहला पूला मन्दिर में लाता था, जबकि बाकी फसल खेत में ही खड़ी रहती थी और टिड्डियों से या आँधी से उसके बर्बाद होने का खतरा बना रहता था (नीति. 3:9-10)। उसने यह जानने से पहले ही दान दे दिया कि उसके पास अपने लिए पर्याप्त होगा या नहीं। यह कोई गणना नहीं थी। यह एक अंगीकार था।

आज के समय में “पहली उपज” का दान कैसा दिखता है? इसका अर्थ अपनी इच्छाओं के लिए उन साधनों को छूने से पहले ही मालिक का हिस्सा वापस कर देना है। बचे हुए में से दान देने का अर्थ यह बताना है कि हम ही मालिक हैं, जो उदारतापूर्वक अपने अतिरिक्त हिस्से में से थोड़ा-बहुत साझा करने का निर्णय लेते हैं। सबसे पहले दान देने का अर्थ यह स्वीकार करना है कि हम तो प्रबन्धक हैं। हमें महीने के अन्त में “बचे हुए” में से दान देने की आदत छोड़नी होगी। अक्सर कुछ बचता इसलिए भी नहीं है, क्योंकि अहंकार कभी न समाप्त होने वाली भूख है। यदि आप राज्य के लिए दान देने से पहले अपनी इच्छाओं के पूरे होने का प्रतीक्षा करेंगे, तो राजा को कभी एक दमड़ी भी नहीं मिलेगी। पहली उपज हमारी अपनी भ्रष्टा के विरुद्ध एक भौतिक प्रहार है। यह एक ऐसा अनुशासन है, जो भण्डार की चिन्ता करने के बजाय प्रावधान पर भरोसा करने के लिए आत्मा पर जोर डालता है। और हमें देने वाले के अच्छे प्रावधान पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए? क्योंकि वह धर्मी और अधर्मी, दोनों पर मेंह बरसाता है।

हर्षित धीरज: जब उदारता एक अनुशासित आदत बन जाती है

आजकल की एक आधुनिक झूठी शिक्षा यह कहती है कि दान देने को हमेशा हृदय में एक नरम और सुनहरी भावना की तरह महसूस करना चाहिए। हम अपने बटुए तक पहुँचने पहले किसी भावुक पल, हृदय को छू लेने वाले वीडियो या जोश से भर देने वाले संगीत का प्रतीक्षा करते हैं। यह भण्डारीपन नहीं है। यह तो मनोरंजन है। हम किसी मालिक की सेवा नहीं कर रहे, बल्कि एक भावना खरीद रहे हैं। आत्मा को हर्षित धीरज जैसी कुछ और अधिक मजबूत बात की आवश्यकता होती है। क्या परमेश्वर केवल उसी दान देने वाले से प्रेम करता है, जो प्रसन्न “महसूस” करता है? प्रेरित पौलुस ने 2 कुरि. 9:7 में जिस “हर्ष” की बात की है, वह कोई क्षणिक या चंचल भावना नहीं है; यह उस सेवक का स्थिर और शान्त आनन्द

है जो जानता है कि वह एक अच्छे राजा के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहा है। दान देना उस मांसपेशी की तरह है, जिसका व्यायाम तब करना चाहिए, जब हृदय ठण्डा पड़ा हो और बैंक खाते में कम रुपया हो। यह इच्छाशक्ति की एक अनुशासित आदत है। ऐसी सुबहें भी आएंगी, जब आपका दान देने का मन नहीं करेगा। ऐसे दौर भी आएंगे, जब इस संसार की बेकार बातें अगले संसार के सोने से अधिक मूल्यवान लगेंगी। उन पलों में, हम इसलिए दान देते हैं, क्योंकि हमें ऐसा करने की आज्ञा दी गई है। हम इसलिए दान देते हैं, क्योंकि हम स्वयं के लिए मर चुके हैं। यदि आपकी उदारता आपकी मनोदशा पर निर्भर करती है, तो आप वचन के सेवक नहीं, बल्कि अपनी भावनाओं के दास हैं। हमें दान देने के बारे में ऐसे ईश-विज्ञान की आवश्यकता है, जो किसी उदास कार्यालय में मंगलवार की सुबह भी बनी रह सके। जब भट्टी खराब हो जाए और गाड़ी फिर से वैसी आवाज करने लगे, तब भी भुगतान पर्ची लिखने का धीरज हमें चाहिए। यहीं पर असल में—साधारण, अनुशासित और शान्त कामों में विश्वासयोग्य रहने से हमारी मूर्तियाँ गिरती हैं, जहाँ न तो कोई बड़ाई मिलती है और न ही कोई भावनात्मक लाभ होता है। परन्तु हर्ष से दान देना इससे कहीं बढ़कर है।

हर्ष से दान देने वाले के आदर्श के रूप में परमेश्वर

परमेश्वर हर्ष से दान देने वाले से प्रेम इसलिए करता है, क्योंकि यह उसके अपने चरित्र को प्रतिबिम्बित करता है तथा सृष्टि और छुटकारे की बुनियादी योजना के अनुरूप है। परमेश्वर के द्वारा हर्ष से दान देने वाले से प्रेम करने का मुख्य कारण यह है कि वह स्वयं हर्ष से दान देने वाला है। चार्ल्स स्पर्जन ने प्रचार किया कि परमेश्वर इसे अपने सबसे बड़े उपहार के द्वारा प्रकट करता है कि—उसने निज पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, बल्कि हम सबके लिए उसे दे दिया। परमेश्वर ने उसे हमारे बिना माँगे ही दिया है, कि जब हम अपराधों और पापों में मरे हुए थे, तब भी उसने हमें अपना प्रेम खुलकर दिया। वह लगातार उदारता से दान देता रहता है। और चूँकि हम स्वाभाविक रूप से उस बात से प्रेम करते हैं, जो हमारे अपने चरित्र को प्रतिबिम्बित करती है, इसलिए हर्ष से दान देने वालों में परमेश्वर की प्रसन्नता अपनी उदारता में उसे पहचानने से आती है। हर्ष से दान देने वालों में परमेश्वर की प्रसन्नता उनमें अपने पुत्र को देखने से आती है।

गुप्त दया: स्थानीय कलीसिया के द्वारा घमण्ड को समाप्त करना

घमण्ड एक परजीवी है, जो हमारे गुणों पर पलता है। यह स्वयं को बड़ा दिखाने के लिए दया के काम का उपयोग कर सकता है। इसी कारण से प्रभु ने मत्ती 6:3 में हमें गुप्त रूप से दान देने की आज्ञा दी थी, ताकि बाएँ हाथ को पता न चले कि दाहिना हाथ क्या कर रहा है। निजी दया में एक जबरदस्त सामर्थ्य होती है। जब हम ऐसी जगह दान देते हैं, जहाँ कोई देख न पाए, तो हम अपने घमण्ड को सीधे तौर पर समाप्त कर रहे होते हैं। हम कह रहे होते हैं कि पिता की मंजूरी ही काफी है। यदि हम केवल तब दान देते हैं, जब तस्खिंयोर पर हमारा नाम लिखा हो, तो हम बस अपने पैसों के बदले सामाजिक प्रतिष्ठा का सौदा कर रहे होते हैं। एक मसीही को अपना पैसा सबसे पहले कहाँ देना चाहिए? पुराने मार्ग स्पष्ट कहते हैं कि: स्थानीय मण्डली में देना चाहिए।

कलीसिया “विश्वास का घराना” है, जो पृथ्वी पर उसके राज्य की दृढ़ता और सार है (गला. 6:10)। यहीं पर वचन का प्रचार किया जाता है और संस्कार निभाए जाते हैं। यह हमारे बीच के कंगालों के लिए सुरक्षा की पहली पंक्ति है। हम सबसे पहले वहाँ पर इसलिए दान देते हैं, क्योंकि यह उस समुदाय के प्रति समर्पण का काम है, जिसमें परमेश्वर ने हमें रखा है। यह हमारी वाचा वाली पहचान का प्रकटीकरण है। हम स्थानीय देह को दान इसलिए देते हैं, क्योंकि यह उदारता का सबसे

अनन्तकाल की भलाई के लिए धन का उपयोग करना

छिपा हुआ, सबसे नियमित और अक्सर बिना किसी दिखावे वाला रूप है। वहाँ से दया की धारा विधवाओं, अनाथों और निराश लोगों तक पहुँचती है। परन्तु इसका आरम्भ खामोशी से, स्थानीय स्तर पर और गुप्त रूप से होता है। इसी तरह से हम अहंकार को समाप्त करते हैं। इसी तरह हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे घमण्ड की गंदगी हमारे भण्डारीपन के सोने को भ्रष्ट न करे। हम एक उधार में मिले जीवन के प्रबन्धक हैं, और प्रबन्धक को मालिक की भुगतान पर्ची पर अपना नाम लिखवाने की आवश्यकता नहीं होती।

4

प्रेम के प्रबन्धकीय काम

सबसे पहले स्थानीय कलीसिया: विश्वास के घराने की प्राथमिकता

हम ऐसे समय में रहते हैं, जहाँ लोगों की वफादारियाँ बँटी हुई हैं, जहाँ स्क्रीन पर चमकने वाली हर आकर्षक बात की ओर मन खिंचा जाता है। हम दूर के क्षितिजों पर सहायता भेजने की परीक्षा में पड़ जाते हैं, जबकि हमारे अपने स्थानीय पवित्रस्थान की छत टपक रही होती है और पास की बेंच पर बैठी विधवा बिना गर्माहट पाए ही रह जाती है। परन्तु वचन की पुरानी व्यवस्था में जमी हुई परम्परा, हमें “विश्वास के घराने” की ओर वापस बुलाती है। जैसे गला. 6:10 में आज्ञा दी गई है, हमें सभी के साथ भलाई करनी चाहिए, परन्तु विशेष रूप से उनके साथ जो विश्वास के घराने के हैं। यह कोई सुझाव नहीं है; यह लक्ष्य की प्राथमिकता है। स्थानीय कलीसिया इस संसार की भूमि पर राज्य का मुख्य केन्द्र है। यहीं पर रोटी तोड़ी जाती है, यहीं बपतिस्मा का पानी शरीर को छूता है, और यहीं पर अनन्तकाल के महत्व के साथ वचन का प्रचार किया जाता है। यदि हम अपने निजी हितों के लिए पैसा खर्च करने के चक्कर में स्थानीय कलीसिया को अनदेखा करते हैं, तो हम वाचाई सदस्य के बजाय, एक आत्मिक ग्राहक की तरह व्यवहार कर रहे होते हैं।

हम सबसे पहले स्थानीय कलीसिया को इसलिए दान देते हैं, क्योंकि यह समर्पण का काम है। उन लोगों के प्रति जवाबदेह होना मुश्किल काम है, जो असल में आपका नाम और आपके पाप जानते हैं। तीन हजार मील दूर किसी “कारण” से प्रेम करना आसान है। परन्तु अपने पीछे वाली कुर्सी पर बैठे उस कड़वे स्वभाव वाले भाई से प्रेम करना मेहनत का काम है। फिर भी, हमारे भण्डारीपन का अर्थ यही है कि वचन के काम और पवित्र लोगों की देखभाल में वहीं पर सहायता करें, जहाँ हम खड़े हैं (1 कुरि. 9:14)। जब हम अपना हिस्सा स्थानीय प्राचीनों के चरणों में रखते हैं, तो हम यह कह रहे होते हैं कि हमारे अपने क्षेत्र में सुसमाचार का बने रहना हमारी अपनी पसन्द से अधिक महत्वपूर्ण है। यह परमेश्वर की दया के काम का प्रबन्धकीय केन्द्र है। यदि स्थानीय दीवट इसलिए बुझ जाता है, क्योंकि उसके प्रबन्धक अपने शौक पूरे करने में बहुत व्यस्त थे, तो हम अपने मुख्य कर्तव्य में विफल रहे हैं। स्थानीय कलीसिया ही लंगर है और इसके बिना, हमारी उदारता बस एक भटकती हुई धारा की तरह है, जो अन्त में हमारी अपनी भावुकता की रेत में कहीं खो जाती है।

रणनीतिक करुणा: भूमि पर असली आवश्यकता को पहचानना

यह संसार सहायता के लिए बड़े हुए हाथों से भरा पड़ा है, और हर हाथ के खाली होने का कारण एक जैसा नहीं होता। यह एक सांसारिक परेशानी है कि: हमें उदार होने की आज्ञा तो दी गई है, परन्तु साथ ही हमें साँपों की तरह बुद्धिमान होने की

अनन्तकाल की भलाई के लिए धन का उपयोग करना

भी आज्ञा दी गई है। एक ऐसी “दया” भी होती है, जो असल में क्रूरता का ही एक रूप है और यह बर्बादी को बढ़ावा देती है तथा उन बुराइयों के लिए ईंधन का काम करती है, जो किसी मनुष्य को बदहाली में रखती हैं। रणनीतिक करुणा ही संकट और आदत के बीच अन्तर करने की सामर्थ्य देती है। हमें टूटे हुए लोगों का दुःख दूर करने की बुलाहट तो मिली है, परन्तु हमें आलसियों के बलवे को बढ़ावा देने की बुलाहट नहीं मिली। यह मार्ग परिश्रम की गरिमा और मनुष्य की पूर्ण भ्रष्टता की सच्चाई की पहचान करता है। 2 थिस्स. 3:10 के सिद्धान्त को मानते हुए, हम समझते हैं कि भले ही अनुग्रह मुफ्त है, परन्तु उस अनुग्रह का भण्डारीपन करने के लिए समझदारी की आवश्यकता होती है। कंगाल हमारे बीच हमेशा रहेंगे। परन्तु क्या उनमें से कुछ हमारे ही द्वारा कंगाल बनाए गए हैं? क्या हम दान देने के अपने भण्डारीपन में प्रेरित पौलुस के इस मापदण्ड को लागू करने में विफल रहे हैं कि “यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए”? चूँकि सब कुछ प्रभु का है, इसलिए हमें इसके लिए जवाबदेह भी ठहराया जाएगा। और अनियंत्रित कल्याण करने से असल में किसे लाभ मिलता है? पाने वालों को या किसी और को? परिपक्व लोगों के भण्डारीपन में दूसरों की क्षमताओं को बढ़ाना भी शामिल है, ताकि निर्भर बने रहने के बजाय, वे भी भरोसेमन्द भण्डारी बनें।

हमें असली आवश्यकताओं को देखना चाहिए—वह पिता, जिसकी नौकरी चली गई, वह माँ, जो हिंसा से बचकर भाग रही है, वह बच्चा, जिसके पास जूते नहीं हैं—और उनकी सहायता ऐसे हृदय खोलकर करनी चाहिए, जिससे हमें मिला अनुग्रह प्रतिबिम्बित हो। परन्तु जब “हाँ” कहने से कोई व्यक्ति परमेश्वर से और दूर हो जाए, तो हममें “न” कहने का साहस भी होना चाहिए। इसके लिए समय चाहिए होता है। इसके लिए गरीबों का जीवन में गहराई से शामिल होना पड़ता है। आप दूर बैठकर रणनीतिक करुणा नहीं दिखा सकते। आपको उनकी कहानियाँ जाननी होंगी। हम किसी व्यक्ति के जीवन में आशा की “किरणों” को ढूँढ़कर वहाँ निवेश करते हैं। हम पूछते हैं कि क्या यह उपहार किसी की आत्मा को सुसमाचार के निकट लाएगा या बस उन्हें उनके घमण्ड में आराम से रहने देगा। दूसरों के द्वारा लाभ उठाया जाना पवित्रता की निशानी नहीं है। यह खराब भण्डारीपन की निशानी है। हम राजा के सोने का प्रबन्धन कर रहे हैं, और हमें इसे ऐसी बातों पर खर्च करना चाहिए, जिनका महत्व अनन्तकाल तक रहे। हम ऐसी संस्थाओं को ढूँढ़ते हैं, जो पृथ्वी की रोटी और स्वर्ग की रोटी दोनों को साथ लेकर चलती हैं। यदि हम केवल अपने अपराध-बोध को संतुष्ट करने के लिए दान देते हैं, तो हम मुद्दे से चूक जाते हैं।

अगली पीढ़ी को सिखाना: मालिकों का नहीं, बल्कि परदेशियों का पालन-पोषण करना

हमारे बच्चे मुट्ठी बन्द करके जन्म लेते हैं। यह पतन की निशानी है। दूध पिलाने के समय से ही, “यह मेरा है!” का रोना अदन की वाटिका के बलवे की याद दिलाता है। यदि हम उन्हें जान-बूझकर उधार में मिले जीवन का ईश-विज्ञान नहीं सिखाते, तो यह संसार बड़े आनन्द से उन्हें मॉल की संस्कृति सिखा देगा। बच्चों को बाइबल-आधारित भण्डारीपन के बारे में सिखाना केवल व्याख्यान देने से नहीं, बल्कि बलिदान की आंतरिक वास्तविकता के माध्यम से होता है। उन्हें हमें सुसमाचार के निमित्त संघर्ष करते हुए देखना चाहिए। यदि वे धन को केवल खिलौने और आराम खरीदने के माध्यम के रूप में देखेंगे, तो वे ऊपर से मसीही दिखते हुए भी मूर्तिपूजक के रूप में बड़े होंगे। हमें उन्हें बहीखाता दिखाना चाहिए। जैसा कि नीति. 22:6 सुझाव देता है, हमें उन्हें उसी मार्ग की शिक्षा देनी है, जिस पर उन्हें चलना चाहिए, जिसमें उनके द्वारा राजा के संसाधनों को सम्भालने का तरीका भी शामिल है।

ऐसा हो कि छुट्टियों की बुकिंग करने से पहले, वे हमें मिशनरी या स्थानीय कलीसिया के लिए भुगतान पर्ची लिखते हुए देखें। हमें उन्हें “प्रेम के प्रबन्धकीय कामों” में यह चुनने में सहायता करने देते हुए शामिल करना चाहिए कि किन आवश्यकताओं को पूरा किया जाए। हम उन्हें सिखाते हैं कि हथौड़े या हल की तरह धन भी एक साधन माल है, जिसका उद्देश्य हृदय की भूमि को तैयार करना है, ताकि उसमें वचन का बीज बोया जा सके। हम उन्हें समझाते हैं कि हम मालिकों का नहीं, बल्कि प्रबन्धकों का परिवार हैं। जब उन्हें कोई उपहार मिलता है, तो हम उसे बाँट लेने में उनकी सहायता करते हैं—और ऐसा किसी नियम-कानून की समझ में नहीं, बल्कि इस आनन्द मनाने वाली समझ के साथ होता है कि उस मालिक ने यह दिया है। हम उन्हें पुराने पवित्र लोगों की कहानियाँ सुनाते हैं, जिन्होंने तब तक दान दिया, जब तक उन्हें स्वयं पीड़ा नहीं हुई, क्योंकि वे जानते थे कि स्वर्ग में उनके पास बेहतर और हमेशा रहने वाली सम्पत्ति है (इब्रा. 10:34)। यदि हमारे बच्चे संसार की दृष्टि में तो सफल हो जाते हैं, परन्तु अजगरों की तरह अपनी बेकार की बातें जमा करके रखते हैं, तो हमने उन्हें निराश किया है। हमें उन्हें इस सच्चाई से जोड़ना चाहिए कि वे तो परदेशी हैं। जो सबसे बड़ी विरासत हम छोड़ सकते हैं, वह कोई परोपकारी धन नहीं, बल्कि एक ऐसा बच्चा है, जो यह समझे कि उनका जीवन तो भाप है और उनका बटुआ राज्य के लिए एक हथियार है।

5

वह सम्पत्ति जो संसार के समाप्त होने के बाद भी बनी रहती है

इसे आगे भेजना

मरते हुए लोगों में एक तरह की मूर्खता देखी जाती है। हम लोगों को उनके अन्तिम पलों में जीवन भर जमा की गई बेकार की बातों से घिरे हुए, तथा दस्तावेजों और उपाधियों को ऐसे पकड़े हुए देखते हैं कि मानो वे अनन्तकाल के दरवाजे पर मुद्रा के तौर पर उपयोग हो पाएँगे। उनका उपयोग नहीं हो सकता। आप उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते। शव ले जाने वाली गाड़ी के पीछे खींचने वाली कोई गाड़ी नहीं होती और कफन में जेब नहीं होती। यह एक कठोर सांसारिक सच्चाई है; कि हम जो कुछ भी देखते, छूते और जमा करते हैं, वह इस समय समाप्त हो जाने की दशा में है। परन्तु प्रभु ने हमें एक रहस्यमयी और भारी आज्ञा दी है—स्वर्ग में धन इकट्ठा करो। हमें इसके तरीके को समझना होगा। हम उस नये नगर में जाने का अपना मार्ग “खरीदते” नहीं हैं; उसकी कीमत सिक्कों से नहीं, लहू से चुकाई गई थी। इसके बजाय, हम अपनी आज्ञाकारिता के परिणामों को अपने आगे भेजते हैं। जब कोई प्रबन्धक मालिक के संसाधनों का उपयोग वचन का प्रचार करने, टूटे लोगों को सहारा देने, या स्थानीय कलीसिया बनाने हेतु पैसा देने के लिए करता है, तो वह सम्पत्ति बदल जाती है। वह अब केवल कागज या अंकों वाला आभास नहीं रह जाता। वह महिमा का एक अनन्त भार बन जाता है। हम किसी पराए देश में उन व्यापारियों की तरह हैं, जो जानते हैं कि वहाँ की स्थानीय मुद्रा जल्दी ही बन्द होने वाली है। समझदार मनुष्य समय रहते इस संसार की बेकार हो रही मुद्रा को राज्य के सोने से बदल लेता है। दान देना एक ऐसे “प्रभाव” में निवेश करना है, जो न्याय की आग में भी बचा रहता है। चुपचाप की गई हर उदारता, क्रूस के निमित्त आराम का हर त्याग, एक ऐसी तिजोरी में जमा की गई पूंजी है, जहाँ न तो कीड़े लग सकते हैं और न ही चोर उसे चुरा सकते हैं। जो हम देते हैं, उसे हम खोते नहीं हैं। हम आखिरकार इसे स्थायी बना रहे हैं।

विश्वासयोग्य लोगों का प्रतिफल

अक्सर हम अपने “वेतन की पर्ची” को यही और अभी देखने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। हम एक “शानदार” जीवन, सांसारिक आशीष और अपने आत्मिक निवेश का दिखने वाला लाभ चाहते हैं। परन्तु हृदय जानता है कि इस भूमि पर हिसाब-किताब शायद ही कभी पूरा होता है। यदि आप अपने भण्डारीपन के लिए सांसारिक प्रतिफल की खोज में हैं, तो आपको अपना पूरा वेतन पहले ही मिल चुका है। विश्वासयोग्य लोगों का असली प्रतिफल धन-सम्पत्ति के बढ़ने में नहीं, बल्कि स्वयं मसीह की उपस्थिति में मिलता है। यह उस एकमात्र महत्व रखने वाली आवाज से मिलने वाली “शाबाशी” है। यही हमारी आशा का सार है। हम दिन की गर्मी में कड़ी मेहनत करते हैं, दुःखती हुई पीठ और सख्त हाथों से मालिक के

खेत की देखभाल करते हैं, और हम ऐसा धूल का बड़ा हिस्सा पाने के लिए नहीं, बल्कि मालिक के वापस लौटने के आनन्द के लिए करते हैं। विश्वासी का वेतन किसी बहीखाते में लिखी कोई संख्या नहीं, बल्कि राजा का मुख है। हमें पवित्र धीरज बनाए रखना चाहिए। पुराने पवित्र लोग अपने परिश्रम का पूरा फल देखे बिना ही मर गए। फिर भी वे यह जानते हुए विश्वास के साथ मरे कि उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं गया। हम इस संसार में सेवानिवृत्ति के लिए काम नहीं कर रहे हैं। हम पुनरुत्थान के लिए काम कर रहे हैं। मानवीय वास्तविकता का बोझ भारी होता है, परन्तु उस आनन्द के सामने यह बहुत हल्का है, जो सिंहासन के सामने खड़े होकर और यह महसूस करके मिलता है कि उसके नाम पर दिया गया एक भी पैसा व्यर्थ नहीं गया। बेकार की बातें समाप्त हो जाती हैं। व्यर्थ की बातें जलकर राख हो जाती हैं। और जो बचता है, वह उस नगर में स्वागत किए जाने का बेमिसाल और बिना किसी योग्यता के मिलने वाला अनुग्रह है, जहाँ हमें धूल-मिट्टी की देखभाल करने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि हमें ज्योति के वारिस बन जाएंगे।

प्रावधान में विश्राम करना

जब किसी मनुष्य के पाँवों के नीचे की भूमि ही दूर करने लगे, तो वह कैसे खड़ा रह पाएगा? संकट के समय में, जब नौकरी चली जाए या चारों तरफ से मुश्किलें घेर लें, तो हम अपने पैसों के मामले में परमेश्वर पर कैसे भरोसा करें? हम प्रावधान पर भरोसा करते हैं। यह कोई निष्क्रिय या “जीवन्त” आशावाद नहीं है। यह एक मजबूत और पक्का भरोसा है कि इस जगत पर अधिकार रखने वाला परमेश्वर अपने बच्चों का ध्यान रखना कभी नहीं भूलता। संकट का समय बस वह पल है, जब सब कुछ हमारे नियंत्रण में होने का भ्रम हट जाता है। हमने कभी स्वयं को नहीं सम्भाला था। हम हमेशा पिता के हाथ पर निर्भर थे, और ऐसा उस समय भी था, जब हमारे भण्डार भरे हुए थे। संकट के समय में परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ उधार में मिले हुए जीवन के बुनियादी सिद्धान्तों पर वापस लौटना है। यदि मालिक को यह सही लगता है कि खेत का सामान कम कर देना चाहिए, तो यह उसका परमाधिकार है। मालिक तो वही है, और हम तो बस सहायता करने वाले हैं। परिस्थितियाँ बदलने से हमारा काम नहीं बदलता। हम तो बचे हुए के साथ ही विश्वासयोग्यता रहते हैं। हम इस संसार के अनाथों की तरह घबराते नहीं हैं, क्योंकि हमारा एक पिता है, जो हमारे माँगने से पहले ही हमारी आवश्यकताएँ जानता है। हम आसमान के पक्षियों को देखते हैं—वे जमा नहीं करते, वे बेकार बातों के भण्डारगृह नहीं बनाते। फिर भी प्रभु उन्हें खिलाता है। क्या हम उनसे अधिक मूल्यवान नहीं हैं? संकट के समय का टकराव हमारी आत्मा से स्वयं-पर-निर्भर-रहने की बेकार सोच को दूर करने के लिए होता है। यह हमें विवश करता है कि हम अपना पूरा बोझ वचन पर डाल दें। हम पुराने मार्गों पर खड़े होकर याद करते हैं कि प्रभु ही प्रावधान करता है। हो सकता है कि वह हमारे अहंकार के लिए प्रावधान न करे, और हो सकता है कि वह हमारे घमण्ड के लिए भी प्रावधान न करे, परन्तु वह हमारे जीवन और अपनी महिमा के लिए अवश्य प्रावधान करेगा। हम भण्डार की बहुतायत पर नहीं, बल्कि देने वाले के चरित्र में शान्ति पाते हैं। पृथ्वी प्रभु की है। संकट का समय उसका है। भविष्य उसका है। और हम भी उसके हैं।



निष्कर्षः अन्तिम लेन-देन

हमारी बस्ती में एक वृद्ध स्त्री रहती थी, जो पुराने ओक के पेड़ की तरह झुकी हुई थी, और वह एक ऐसे कमरे में रहती थी, जिसमें से लिनोलियम और पुदीने की गंध आती थी। इस संसार के हिसाब से, वह पूरी तरह से विफल स्त्री थी। उनके पास कोई उपाधि नहीं थी, वह कोई गाड़ी नहीं चलाती थी, और न ही उन्होंने संगमरमर या कांच के स्मारक पीछे छोड़े थे। और जब उनकी मृत्यु हुई, तो उनका सारा सामान गत्ते के तीन बक्सों में आ गया। परन्तु वे बक्से सच नहीं बताते थे। उनमें उनकी धन-सम्पत्ति की वास्तविकता नहीं थी। कई दशकों से, यह बहन अन्तिम लेन-देन में माहिर रही थी। वह बहुत कम पेंशन के सहारे गुजारा करती थी, फिर भी वह राजा के लिए सबसे अधिक सामान पहुँचाने वाली ऐसी चालक थी, जिसे मैंने कभी जाना हो। वह लोगों का जीवन की परेशानियों को पहचान लेती थी—जैसे जवान माँ, जिसके पास दूध नहीं है, अकेला छात्र, या बुखार से जूझते इलाके का मिशनरी—और वह चुपचाप अपनी गुप्त दया का मरहम उन पर लगा देती थी। उन्होंने उधार में मिले जीवन के ईश-विज्ञान को अपनी रग-रग में बसा लिया था। जब उन्होंने अन्तिम साँस ली, तो कोई खालीपन नहीं छोड़ा। उन्होंने एक बहुत बड़ी, कभी न मिटने वाली छाप छोड़ी, जिसने उस नये नगर के फाटकों को हिला दिया। उन्होंने यह सब कुछ पहले ही आगे भेज दिया था। जब दूसरे लोग अपनी बेकार बातों को चमका रहे थे, तब वह अपनी धूल को राज्य के सोने में बदल रही थी।

हम सब उसी शान्त कमरे की ओर बढ़ रहे हैं। हम सब उस हिसाब-किताब की ओर बढ़ रहे हैं, जो हमें मालिक को देना है। आज हम जिस मार्ग पर चल रहे हैं, वह एक दिन सिंहासन वाले कमरे के भूमि में बदल जाएगा, और पुस्तकें खोली जाएँगी। उस दिन, मालिक आपका लेखा-जोखा या आपके पेशे की प्रतिष्ठा नहीं माँगेगा। वह उन दीवारों से प्रभावित नहीं होगा, जो आपने संसार से स्वयं को बचाने के लिए बनाई थीं। वह भण्डारीपन के निशान देखेगा। वह इस बात का सबूत देखेगा कि आप समझ गए थे कि आपका जीवन एक कर्जा था। वह पूछेगा कि आपने उसकी धूल, उसकी हवा, उसकी चाँदी और आपको दिए गए उसके जीवन के साथ क्या किया। और जो भी सिक्का हमने डर के मारे कसकर पकड़ा था, वह हमारी गर्दन पर बोझ बन जाएगा, परन्तु जो भी पैसा हमने विश्वास में होकर दिया था, वह स्तुति का गीत बन जाएगा। अन्तिम लेन-देन उस बारे में नहीं है, जो हमने रख लिया, बल्कि उस बारे में है, जो हमने समर्पित कर दिया। यही वह पल है, जब प्रबन्धक चाबियाँ वापस सौंपता है और महसूस करता है कि मालिक का आनन्द ही हमेशा असली विरासत थी।

एक पासबानी प्रार्थना

हे पवित्र और सर्वशक्तिमान पिता, हम धूल भरे हृदय और बन्द मुट्ठी वाले स्त्री-पुरुष हैं। हम अंगीकार करते हैं कि हमने देने वाले से बढ़कर उपहार से प्रेम किया है। हमने अपने घमण्ड को बढ़ावा देने के लिए तेरे संसाधनों का उपयोग करते हुए, तेरी भूमि पर अपने-अपने राज्य बनाने का प्रयास किया है। हमारे जमा करने वाले बुखार को तोड़ दे। हमारे स्वयं-पर-निर्भर-रहने के घमण्ड को दूर कर और हमें बची हुई बातों के प्रति विश्वासयोग्य रहने का साहस दे। ऐसे लोगों की तरह जीवन बिताने में हमारी अगुवाई कर, जिन्हें सबसे बड़ा दाम देकर खरीदा गया है, और ऐसे लोगों की तरह जीवन बिताने में हमारी अगुवाई कर, जिनमें मसीह वास करता है।

हम उस स्वतंत्रता के लिए प्रार्थना करते हैं, जो तब मिलती है, जब हमें एहसास होता है कि हमारे पास कुछ भी नहीं है। हमारे भीतर के पैसों के प्रेम को समाप्त कर दे, इससे पहले कि वह हमारी आत्मा को समाप्त कर दे। हमें प्रतिनिधि होने का वह आनन्द दे, जो एक टूटे हुए संसार में तेरा सामान पहुँचाने वाले चालकों का शान्त और स्थिर आनन्द है। हम उन लोगों की तरह जीवन बिताएँ, जिन्हें कमी-घटी का डर न हो, बल्कि जो हमारे राजा के कभी न समाप्त होने वाले प्रावधान पर भरोसा रखते हों। जब हमारे परिश्रम का दिन ढले और हम तेरे मुख के सामने खड़े हों, तो हम अपना जीवन उस एकमात्र महिमा के लिए खर्च करके, जो इस संसार के बाद भी बनी रहती है, खाली हाथों और भरे हुए हृदयों के साथ पाए जाएँ।
आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्तिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

